काव्यविधा-पञ्चदलम् (तान्का)

डॉ. ओमप्रकाश पारीक
एसोसिएट प्रोफेसर
कॉलेज शिक्षा निदेशालय, राजस्थान

(4)

दम्पत्योः स्वप्नाः
विवाहाग्निधूमेन
अक्ष्णोः अश्रूणि
प्रवाहेण स्वच्छीभूय
गृहस्थं धारयन्ति

दम्पती के सपने
विवाह की यज्ञीय अग्नि के धुयें से
आँखों में आँसू बहने से स्वच्छ होकर
गृहस्थ जीवन को धारण करते हैं

*वास्तव में स्वच्छीभूय शब्द में बहुत व्यञ्जना है, विवाह का यज्ञ सपनों को स्वच्छ बनाकर उत्तरदायित्वपूर्ण बना देता है। कच्चे और अति जोशपूर्ण सपने परिपक्वता से गृहस्थी में उत्साह भर कर जीवन चलाते हैं

(5)

प्रकाशं कर्तुम्
वर्तिकास्नेहाग्निभिः
मिथः विरोधः
त्यागे परिणम्यते
नेतृभिःशिक्षितव्यम् ।।

प्रकाश करने के लिये
बाती तेल और अग्नि द्वारा
अपना परस्पर विरोध
त्याग में बदल दिया जाता है
नेताओं को इससे सीखना चाहिये।

(6)

कर्णौ आकुञ्च्य।
स्नेहेन संस्कारैश्च।
आत्मसन्ततौ
जीवनं भरति हि
गौरवमयी माता

कानों को उमेठकर
स्नेह और संस्कारों से
अपनी सन्तान मे
जीवन भर देती है
गुरुत्व से युक्त माता

*वास्तव में इस संसार मे एक साथ स्नेह और संस्कारों का संचार माता ही करती है। उसके कान उमेठने और पुचकारने से सन्तान का संपूर्ण जीवन तैयार होता है। यह सब अपने आप अनौपचारिक होता रहता है, इसलिये कहा है:- 'सहस्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते' अर्थात् माता का गौरव पिता से हजार गुना अधिक होता है।